

SMT. BASANTI BISHT

Smt. Basanti Bisht is the first and the only woman lead 'Jaagar-Singer'. She is an 'A' grade Artiste and a member of Programme Advisory Committee of Aakashwani. 'Jaagar' is an impromptu Hymn, based on a lokgaatha of a deity, sung in his adoration and to awaken and invite him to an auspicious occasion. Jaagar singing in public, until the advent of Smt. Bisht, has been a male prerogative strictly prohibited for women. Against this environment Smt. Bisht has earned acceptance and recognition as the first and the only women lead Jaagar Singer.

2. Born on January 14, 1953 in a remote village Luwani in Chamoli Garhwal, Smt. Bisht was the first girlchild of her area to go to school upto fifth standard and earn a scholarship for standing first in District Board Examination. At the age of 13 in 1966, she worked as a Gram-Lakshmi and successfully conducted Balwari and Adult Education programme in her village viz: sewing-weaving, microsaving, parivarniyojan, nutritious-diet, hygiene, literacy and shrama-daan. At the age of 32 in Jalandhar where her husband an Army-Man was posted, she learnt knitting and Shastriya-Sangeet. Thereafter, she worked as an instructor in Women-Welfare Centre of 11 Corps. Headquarter, Indian Army. In the year 1996, she was elected as the first women village Pradhan. While as Pradhan, she worked for the removal of social, economic and religious disabilities of the depressed and the women & child. Under her leadership her village recognized the right of the depressed class to invite and to get invited at religious/social functions of the village. She also worked for alcohol-ban and the environment. Van-Panchayats were constituted and consolidated by her when she was a Pradhan.

3. Smt. Bisht has been travelling all over Uttarakhand Himalayas studying the scattered oral extinct folksongs, folklores, traditions and distinct values of Kumaon and Garhwal that has been transmitted orally to the next generation since ages. Thereupon, after years of research and practice Smt. Bisht has assimilated, rejuvenated, mastered and composed lyrics and musical-notations for more than 500 extinct and unwritten folksongs but keeping their basic character intact. Smt. Bisht has woven the puranic stories, traditions and values of hill life such as - love for Nature and Nation, brotherhood, environment conservation, atithi-devo-bhava, heroic-sensitiveness of women, melody and traditional music and instruments in these folksongs showcasing the composite nature and unity of the culture of India. These folksongs have been broadcasted by AIR and Doordarshan. Her special work of which she is a specialist and exponent, is on the sacred folklore of Bhagwati Nanda the chief deity of Uttarakhand and consort of Lord Shiva. On this subject after years of research Smt. Bisht has composed a maiden and original work in verse form called Nanda ke Jaagar- “Sufal Hwe Jaya Tumari Jaatra”, an epic on the folklore of Bhagwati Nanda, a work of its own kind not done before in India. Uttarakhand Sanskriti ke Swar and Jai Bhagwati Nanda audio album are her other maiden work on conservation of culture.

4. Smt. Bisht has been training folksongs and dances to young and old at school, college, HNB Garhwal University, Rangmanch of Culture Department Uttarakhand and under Guru-Shishya programme of North-Cultural Centre Patiala. H.N.B Garhwal University and Culture Department of Uttarakhand has archived her compositions and regularly invites her as visiting faculty. Smt. Bisht has also worked for the promotion of the forgotten hill dresses. She is also an empanelled Artist with ICCR Delhi. Smt. Bisht has performed at various national and international forums including Aakashwani and Doordarshan. Now at 64 years, Smt. Bisht is continuing research in folksongs and folklores of Uttarakhand.

5. Smt. Bisht is the recipient of more than two dozen awards viz:- Rajya Stree Shakti Teelu Rauteli 2010 for distinguished contribution in women empowerment by Uttarakhand Government, BC Roy Award 2010 for being the only female Jaagar Singer by Indian Medical Association, Raj Rajeshwari 2011 for outstanding, lasting contribution for women Glory by State Planning Commission and PHD Chamber of Commerce, Hind Prabha 2011 for social work, serving humanity and Nation by UP Mahila Manch, UGB Samman 2010 for distinguished contribution in Culture by Uttarakhand Gramin Bank.



श्रीमती बसन्ती बिष्ट

श्रीमती बसंती बिष्ट प्रथम एवं एकमात्र अग्रणी महिला "जागर-गायक" हैं। वे आकाशवाणी के 'क' ग्रेड की कलाकार हैं एवं कार्यक्रम सलाहकार समिति की सदस्या हैं। "जागर" एक तात्कालिक भजन-गान है जो किसी देवता की लोकगाथा पर आधारित होता है तथा उनकी प्रशंसा एवं किसी शुभ अवसर पर उनका आह्वान करने एवं उन्हें आमंत्रित करने के लिए गाया जाता है। इस क्षेत्र में आपके पर्दापण से पहले तक, सामान्य जनता में जागर गायकी पूर्णतया पुरूष प्रधान थी एवं महिलाओं का इसमें निषेध था। इस माहौल के प्रतिकूल जाकर आपने प्रथम एवं अग्रणी महिला जागर गायक के रूप में स्वीकृति एवं पहचान प्राप्त की।

2. आपका जन्म चमौली गढ़वाल के लुआनी नामक दूरस्त गांव में 14 जनवरी, 1953 को हुआ। आप अपने क्षेत्र में पांचवी कक्षा तक इतनी शिक्षा प्राप्त करने वाली पहली बालिका थीं एवं आपने जिला बोर्ड परीक्षा में प्रथम आकर छात्रवृत्ति प्राप्त की। वर्ष 1966 में मात्र 13 वर्ष की अल्पायु में आपने ग्राम लक्ष्मी के रूप में कार्य किया एवं बालवारी तथा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम संचालित किये जिसके अंतर्गत सिलाई-बुनाई, लघु बचत, परिवार नियोजन, पौष्टिक आहार, स्वच्छता, साक्षरता एवं श्रमदान जैसे कार्यक्रम आयोजित किये गए। 32 वर्ष की आयु में आपने जालंधर में, जहां आपके पति की तैनाती सेना में थी, आपने बुनाई तथा शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त की। तदोपरांत आपने 11वीं कोर्पस के महिला कल्याण केन्द्र, मुख्यालय, भारतीय सेना में अनुदेशक के रूप में कार्य किया। वर्ष 1996 में आप प्रथम महिला ग्राम प्रधान के रूप में चुनी गईं। प्रधान के रूप में आपने कमजोर वर्ग तथा महिला एवं बच्चों के सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक विषमताओं को दूर करने के लिए कार्य किया। आपके नेतृत्व में आपके गांव में समाज के शोषित वर्ग को गांव के धार्मिक/सामाजिक कार्यक्रमों में आमंत्रण देने एवं उन्हें आमंत्रित किये जाने के अधिकार को मान्यता मिली। आपने मद्य निषेध एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए पुरजोर कार्य किये। जब आप ग्राम प्रधान थीं, उस समय आपके द्वारा वन पंचायत गठित एवं समेकित की गई।

3. आप संपूर्ण उत्तराखंड हिमालय क्षेत्र की यात्रा करती रही हैं एवं विलुप्त हो रहे एवं बिखरे पड़े लोक गीतों, लोक गाथाओं, परंपराओं एवं कुमांऊ तथा गढ़वाल की विशेष मूल्यों, जिसे युगों से भावी पीढ़ी को मौखिक रूप से अंतरित किया जाता रहा है, का अध्ययन करती रही हैं। तदोपरांत वर्षों के अपने अनुसंधान तथा कार्य व्यवहार के कारण आपने विलुप्त प्राय एवं अलिखित 500 से अधिक लोक गीतों को आत्मसात, पुनरोद्धार किया तथा उसमें दक्षता हासिल की तथा उसके लिए संगीत एवं वाद्य संकेत की संरचना की, परंतु आपने उसके मूल पात्र को यथावत रखा। आपने पौराणिक कहानियों, परंपराओं तथा पर्वतीय जीवन के मूल्यों, यथा-प्रकृति एवं राष्ट्र प्रेम, भातृत्व, पर्यावरण संरक्षण, अतिथि देवो भव:, महिलाओं की वीरतापूर्ण संवेदना, गीत एवं पारंपरिक संगीत तथा वाद्य यंत्र जो इन लोकगीतों में उपयोग किये जाते हैं का विशेष अनुरक्षण किया और इस तरह भारत की समेकित संस्कृति तथा उसकी बेमिसाल एकता को प्रदर्शित किया। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के माध्यम से इन लोकगीतों का प्रसारण किया जा चुका है। आपका विशेष कार्य जिसके लिए आपको विशेषज्ञता प्राप्त है और आप जिसकी प्रणेता मानी जाती हैं, वह है भगवती नंदा की पवित्र लोकगाथा जो उत्तराखंड की मुख्य देवी हैं एवं भगवान शिव की अर्धांगिनी हैं। इस विषय पर वर्षों के अपने अनुसंधान के पश्चात आपने छंद काव्य के रूप में अपनी मौलिक कृति "नंदा के जागर-सुफल हुए जाए तुमरी जात्रा" की रचना की जो भगवती नंदा की लोकगाथा पर एक महाकाव्य है तथा अपने आप में एक ऐसी कृति है जो भारत में इससे पहले नहीं रची गई थी। "उत्तराखंड संस्कृति के स्वर" तथा "जय भगवती नंदा" उनकी प्रकृति संरक्षण संस्कृति पर ओडियो एलबम के रूप में अन्य अनूठी कृतियां हैं।

4. आप विद्यालयों, महाविद्यालयों, एचएनबी गढ़वाल विश्वविद्यालय, उत्तराखंड संस्कृति विभाग के रंगमंच तथा नोर्थ-कल्चरल सेंटर, पटियाला के गुरू शिष्या कार्यक्रम के अंतर्गत युवकों एवं बड़ों को लोकगीतों एवं नृत्यों में प्रशिक्षण देती रही हैं। एचएनबी गढ़वाल विश्वविद्यालय एवं उत्तराखंड संस्कृति विभाग ने आपकी रचनाओं के अभिलेख तैयार किये हैं एवं अतिथि फैकल्टी के रूप में आपको नियमित रूप से आमंत्रित करते रहते हैं। आप आई.सी.सी.आर. दिल्ली में सूचीबद्ध कलाकार भी हैं। आपने आकशवाणी एवं दूरदर्शन सहित विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी प्रस्तुति दी है। वर्तमान में 64 वर्ष की आयु में भी आप उत्तराखंड के लोकगीतों एवं लोकगाथाओं के क्षेत्र में अपना अनुसंधान कार्य अनवरत कर रही हैं।

5. आपको अब तक दो दर्जनों से अधिक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं यथा उत्तराखंड सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए राज्य स्त्री शक्ति टीलु रावॅतेली 2010 पुरस्कार, एकमात्र जागर सिंगर होने के कारण भारतीय चिकित्सा संघ द्वारा बी.सी. राय पुरस्कार 2010, राज्य योजना आयोग एवं पीएचडी चैम्बर ऑफ कामर्स द्वारा महिला प्रतिष्ठा के लिए उत्कृष्ट एवं विशिष्ट योगदान के लिए राजराजेश्वरी 2011 पुरस्कार, सामाजिक कार्य, मानवता एवं राष्ट्र की सेवा के लिए उत्तर प्रदेश महिला मंच द्वारा हिन्द प्रभा 2011, उत्तराखंड ग्रामीण बैंक द्वारा संस्कृति के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए प्राप्त यूजीबी सम्मान 2010 विशेष रूप से उल्लेखनीय है।